चौघड़िया मुहूर्त - एक विश्लेषण

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर (वेदविज्ञान)
विश्वगुरु दीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

भारतीय कालगणनाधारित मुहूर्त्त पद्धति में चौघड़िया मुहूर्त की मान्यता अति प्राचीन काल से चली आ रही है। 'चौघड़िया' शब्द का अर्थ है चार घटी का समय। यद्यपि कालगणनानुसार चार घटी का समय 96 मिनिट का होता है, तथापि अहोरात्रीय विभाजन में यह समय 90 मिनिट का है तथा वही इसके लिए स्वीकार्य माना गया है। यह मुहूर्त्त-अनुक्रम पृथ्वी की स्थिति एवं ग्रहों की गोचरीय दृश्य गति पर आधारित है। हमारी पृथ्वी की परिधि 59,60,400 किलोमीटर की है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर निरन्तर भ्रमण कर रही है पृथ्वी के इस घूर्णन में उसकी सतही दृश्य गति 2,48,350 किलोमीटर प्रतिघंटा है, जबकि ग्रहों की दृश्य गतियाँ जो गोचरीय आधार पर इस घूर्णन को पूर्ण करती हैं, वे भिन्न भिन्न गतिक्रम को लिए हुए है। इनमें सूर्य की दृश्य गति 686 किलोमीटर प्रति घंटा, चन्द्रमा की दृश्य गति 1,10,378 किलोमीटर प्रति घंटा, मंगल की दृश्य गति 5491 किलोमीटर प्रति घंटा, बुध की दृश्य गति 8236.5 किलोमीटर प्रति घंटा, बृहस्पति की दृश्य गति 638.34 किलोमीटर प्रति घंटा, शुक्र की दृश्य गति 8235.8 किलोमीटर प्रति घंटा एवं शनि की दृश्य गति 274 किलोमीटर प्रति घंटा है।

सूर्योदय के समय जो वार होता है, उसी का अधिपति ग्रह दक्षिण वाम दिग्वृत्त में पूर्व दिशा में 0° पर होता है। चूँकि वृत्त की परिपूर्णता भी यहीं पर होती है, अत: इसे 360° भी मानना चाहिए। इस समय हमारी पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र ठीक उसी ग्रह के सामने होता है, जो उस वार का अधिपति होता है तथा इसी आधार पर उस वार विशेष की उपकल्पना की गयी है। इसके उपरान्त घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब क्रमशः 22.5°, 45°, 67.5°, 90°, 112.5°, 135°, 157.5°, 180°, 202.5°, 225°, 247.5°, 270°, 292.5°, 315°, 337.5° पर पहुँचती है, तब जो ग्रह पृथ्वी के सम्मुखीय केन्द्र के समक्ष होता है, उस ग्रह की रश्मियाँ पृथ्वी तक पहुँचने में समर्थ होती हैं, क्योंकि उस समय पृथ्वी एवं उस ग्रह के मध्य किसी प्रकार व्यवाय (बाधकत्व) नहीं होता।

ये ग्रह-विशेष की रश्मियाँ पृथ्वीवासियों पर अपने अपने गुणधर्मानुसार प्रभाव डालती हैं, अत: शुभ रश्मियों की पृथ्वी को प्राप्ति का समय शुभ मुहूर्त माना जाता है, जबकि अशुभ रश्मियों की पृथ्वी को प्राप्ति का समय अशुभ मुहूर्त्त माना जाता है। सामान्यतया सभी ग्रह अपना शुभाशुभ प्रभाव डालते हैं, किन्तु 'प्राधान्येन तद्वादस्तद्वादः'न्याय से अशुभ रश्मियों के अधिकता से प्रसार करने के कारण सूर्य, मंगल एवं शनि के मुहूर्त्त को चौघड़िया मुहूर्त्त में अशुभ मान लिया गया है। इसका कारण यह है, कि इन ग्रहों की सीधे पृथ्वी के सम्मुखीय केन्द्र पर पड़ने वाली रश्मियाँ पृथ्वी के सजीव-निर्जीव सभी प्राणियों-पदार्थों के लिए घातक होती हैं।

उदाहरण के लिए रविवार को पूर्व दिशा में 0° पर सूर्य की स्थिति होती है तथा इसका प्रभाव तब तक रहता है, जबकि पृथ्वी का सम्मुखीय केंद्र 22.5° पर नहीं पहुँच जाती। इस स्थिति में सूर्य एवं पृथ्वी दोनों के सम्मुखीय केन्द्र परस्पर एक दूसरे के ठीक सामने होते हैं तथा चूँकि सूर्य अत्यधिक उष्ण है, अत: उसकी सीधी रश्मियों से पृथ्वी पर पहुँचने वाली उष्मा के उद्वेगकारक होने से रविवार को पहला चौघड़िया मुहूर्त्त'उद्वेग'या'उत्पात'संज्ञक कहा गया है।

जब घूर्णन करती हुई पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 22.5° पर पहुँचता है, तब उसके ठीक सामने शुक्र का सम्मुखीय केन्द्र होता है। शुक्र में उष्मारहित भ्राजस्व है तथा शुक्र का प्रभाव इसी कारण शुभ माना गया है। पृथ्वीवासियों को शुभ फलदायक होने से तथा शुक्र के अपने स्वभाव चंचलता के कारण इसे 'चर' या 'चंचल' संज्ञा से कहा जाता है। पृथ्वी का समुखीय केंद्र 0° से 22.5° तक पहुँचने में एक घंटा 30 मिनिट का समय लेता है। शुक्र का प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केंद्र 45° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 45° पर पहुँचता है, तब उसके ठीक सामने बुध का सम्मुखीय केन्द्र होता है। बुध चन्द्रात्मज होने से समशीतोष्ण रश्मियों वाला है तथा पृथ्वी भी समशीतोष्ण स्वभाव वाली है, अत: तुल्यगुण धर्म होने से बुध के इस मुहूर्त को'लाभ'संज्ञा से कहा गया है। इस मुहूर्त्त में पृथ्वीवासियों को सर्वाधिक लाभप्रद रश्मियाँ प्राप्त होती हैं। यह रविवार का तीसरा मुहूर्त्त है तथा इसका प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 67.5° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 67.5° पर पहुँचता है, तब उसके ठीक सामने चन्द्रमा का सम्मुखीय केन्द्र होता है। चन्द्रमा अत्यन्त शीत रश्मियों वाला है तथा सोम का आधायक है, अपनी अमृतमयी रश्मियों को वह इस अवधि में पृथ्वी पर पहुँचाता है, अत: इस मुहूर्त्त को'अमृत'संज्ञा से कहा गया है। यह रविवार का चौथा मुहूर्त्त है,

तथा इसका प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 90° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 90° पर पहुँचता है, तो उसके ठीक सामने शनि का सम्मुखीय केन्द्र होता है। शनि क्रूर ग्रह है तथा इसमें घातक रश्मियों का बाहुल्य है। पृथ्वी पर पहुँचने वाली इसकी रश्मियाँ विनाश एवं विघटन की कारक होने से इस मुहूर्त्त को'काल'संज्ञा से कहा गया है। यह रविवार का पाँचवाँ मुहूर्त्त है तथा इसका प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 112.5° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 112.5° पर पहुँचता है, तब उसके ठीक सामने बृहस्पति का सम्मुखीय केन्द्र होता है। बृहस्पति सौम्य ग्रह है तथा देवगुरुत्व के कारण परोपकारी है। इसकी रश्मियाँ ऐकान्तिक रूप से जीवनदायिनी शुभ रश्मियाँ हैं, अत: इस मुहूर्त को शुभ संज्ञा से कहा गया है। यह रविवार का छठा मुहूर्त्त है तथा इसका प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 135° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 135° पर पहुँच जाता है, तब उसके ठीक सामने मंगल का सम्मुखीय केन्द्र होता है। मंगल भी सूर्य की भाँति उष्ण एवं शुष्क प्रकृति का ग्रह है। इसकी रश्मियाँ भी घातक होती हैं, अत यह क्रूर ग्रह भी कहा गया है। इसकी रश्मियों की प्रमुख विशेषता यह है, कि वे रक्त में श्वेतकणिकाओं का अवशोषण कर प्राणियों की रोगप्रतिरोधक क्षमता में कमी कर देती हैं, अतः रोग का सपक्षी होने से इसके मुहूर्त्त को'रोग'संज्ञा से कहा गया है। यह रविवार का सातवाँ मुहूर्त्त है तथा इसका प्रभाव भी तब तक स्थिर रहता है, जब तक कि पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 157.5° पर नहीं पहुँच जाता।

जब पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 157.5° पर पहुँचता है, तब उसके ठीक सामने सूर्य का सम्मुखीय केन्द्र होता है। अत: पुन: वही मुहूर्त्त आवृत्त होता है, जो सूर्योदय के समय था। इस प्रकार दिवाकाल के आठ मुहूर्त होते हैं। आठवें मुहूर्त्त की समाप्ति पर पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र 180° पर होता है तथा यहीं से रात्रिकालीन चौघड़िया शुरू हो जाता है।

रात्रिकालीन चौघडियों में सर्वप्रथम पृथ्वी का सम्मुखीय केन्द्र बृहस्पति के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'शुभ'तथा उसके पश्चात् इसी क्रम से 202.5° पर चन्द्रमा के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'अमृत'तथा उसके पश्चात् इसी क्रम से 225° पर शुक्र के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'चर'या'चंचल'तथा उसके पश्चात् 247.5° पर मंगल के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'रोग'तथा उसके

पश्चात् 270° पर शनि के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'काल'तथा उसके पश्चात् 292.5° पर बुध के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'लाभ'तथा उसके पश्चात् 315° अंश पर सूर्य के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से 'उद्वेग' या 'उत्पात' तथा उसके पश्चात् 337.5° पर पुन: बृहस्पति के सम्मुखीय केन्द्र के ठीक सामने होने से'शुभ'का चौघड़िया स्पष्ट होता है।

रविवार की भाँति ही अन्य वारों में भी इसी प्रकार गतिक्रम से चौघडिया मुहूर्त्त बनते हैं, जो हमें हमारे दैनिक शुभप्रवृत्तिमूलक कार्यों की कर्त्तव्यता एवं अकर्त्तव्यता का स्पष्ट निर्देश करते हैं। शुभ काल में किया गया शुभ कार्य भविष्य में कभी भी अशुभता से प्रभावित नहीं होता, किंतु अशुभ काल में किया गया शुभ कार्य भविष्य में यथा शीघ्र अशुभता से प्रभावित हो कर कष्टप्रद बन जाता है, अत: विवेकशील मनुष्य को शुभ-अशुभ काल का विचार करके ही दैनिक शुभ मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करना चाहिए, ऐसा कालविधान ज्योतिषशास्त्र के प्रणेताओं ने बतलाया है:-

स्वभावादेव कालोऽयं शुभाशुभसमन्वितः।
अनादिनिधनः सर्वो न निर्दोषो न निर्गुणः।।
तस्मान्निर्दोषकालार्थे मुहूर्त्तमधिगच्छताम्।
कालः शुभो गुणैर्युक्तो बलवद्भिः शुभप्रदः।।

अर्थात् समय ही स्वाभाविक रूप से शुभ एवं अशुभ से युक्त होता है। यह आदि एवं अन्त से रहित है। यह न सर्वथा निर्दोष है और न ही सर्वथा गुणरहित है। अत: काल की निर्दोषता को जानने के लिए मुहूर्त्त को भली भाँति समझना चाहिए, क्योंकि बलवान् गुणों से युक्त शुभ काल ही प्रवृत्ति को शुभ बना कर कार्य के शुभ फल को प्रदान करता है।

(नोट - इस लेख में चौघडिया मुहूर्त्त की कालगणना भारतीय सूर्योदय एवं भारत में दृश्य सूर्य के उदय बिन्दु को आधार मान कर दर्शायी गयी है । उत्तर भारत में चौघडिया मुहूर्त्त को आज भी भारतीयों द्वारा शुभाशुभ कालनिर्णय हेतु अपनाया जाता है।)